प्रारंभिक परीक्षा

123 समझौता

संदर्भ

संयुक्त राज्य अमेरिका और सऊदी अरब ने 30 वर्षीय असैन्य परमाणु सहयोग समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं, जिससे पश्चिम एशिया में परमाणु प्रसार के इसके संभावित निहितार्थों को लेकर चिंताएं बढ़ गई हैं।

123 समझौते के बारे में

- **प्रकृति:** 1954 के अमेरिकी परमाणु ऊर्जा अधिनियम की धारा 123 द्वारा शासित एक द्विपक्षीय असैन्य परमाणु सहयोग समझौता।
- **उद्देश्य:** परमाणु अप्रसार मानदंडों और अमेरिकी कांग्रेस के अनुमोदन के अधीन, शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु सामग्री, उपकरण और प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण को सक्षम बनाना।
- **परिणाम:** संयुक्त राज्य अमेरिका और उसके भागीदार देश के बीच परमाणु ऊर्जा उत्पादन और संबंधित परमाणु वाणिज्य में सहयोग की सुविधा प्रदान करता है।
- **सऊदी समझौता:** अमेरिकी कंपनियों को सऊदी अरब के असैन्य परमाणु कार्यक्रम तक पहुंच प्रदान करता है।
- **भारत का समझौता (2008):** सुनिश्चित परमाणु ईंधन आपूर्ति के बदले निर्दिष्ट असैन्य परमाणु सुविधाओं को भारत-विशिष्ट IAEA (अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी) सुरक्षा उपायों (सेफगार्ड्स) के अंतर्गत रखकर परमाणु प्रौद्योगिकी प्रतिबंधों के दशकों का अंत किया।
- **चिंताएं:** घरेलू यूरेनियम संवर्धन प्रसार के जोखिमों को बढ़ा सकता है, पश्चिम एशिया में क्षेत्रीय हथियारों की दौड़ को गति दे सकता है, और निरीक्षण एवं सुरक्षा तंत्र की पर्याप्तता पर सवाल उठा सकता है।

आईएनएस मालवन (INS MALVAN)

संदर्भ

भारतीय नौसेना ने आईएनएस मालवन को सेवा में शामिल (कमीशन) किया।

आईएनएस मालवन के बारे में

- **प्रकार**: यह एक एंटी-सबमरीन वॉरफेयर शैलो वॉटर क्राफ्ट (ASW-SWC) है, जिसे कम गहरे पानी में पनडुब्बी-रोधी अभियानों और तटीय गश्त के लिए डिज़ाइन किया गया है।
- **क्लास और निर्माता:** यह माहे-क्लास का दूसरा जहाज़ है, जिसे कोचीन शिपयार्ड लिमिटेड (CSL) ने बनाया है; इसे CSL और गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स (GRSE) द्वारा बनाया जा रहा है।

फास्ट ट्रैक कोर्ट (FTC)

संदर्भ

प्रधानमंत्री ने पेपर लीक मामलों के त्वरित निपटान को सुनिश्चित करने के लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट (FTC) स्थापित करने का प्रस्ताव रखा।

फास्ट ट्रैक कोर्ट (FTC) के बारे में

- **प्रकृति:** नियमित अदालती मुकदमों (court dockets) पर उनके निपटान को प्राथमिकता देकर मामलों की विशिष्ट श्रेणियों की सुनवाई (ट्रायल) में तेजी लाने के लिए बनाई गई विशेष अदालतें।
- **विधिक स्थिति:** कोई एकल केंद्रीय कानून FTC को शासित नहीं करता है; वे सरकारी योजनाओं या न्यायिक/प्रशासनिक निर्णयों के तहत स्थापित किए जाते हैं।
- **उद्देश्य:** न्याय तक समयबद्ध पहुंच में सुधार करते हुए, गंभीर अपराधों और सुभेद्य समूहों से जुड़े मामलों में न्यायिक देरी को कम करना।
- **कवरेज:** जघन्य अपराधों, लंबे समय से लंबित विवादों, महिलाओं और बच्चों, वरिष्ठ नागरिकों, विकलांग व्यक्तियों, गंभीर रूप से बीमार व्यक्तियों के खिलाफ अपराधों और फास्ट ट्रैक विशेष अदालतों (FTSC) के माध्यम से बलात्कार/पॉक्सो (POCSO) मामलों को संभालती हैं।
- **संवैधानिक आधार:** FTC के निर्माण को मामलों के उचित और वस्तुनिष्ठ वर्गीकरण को अपनाकर अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार) को संतुष्ट करना चाहिए; केवल गतिशीलता (speed) किसी विशेष अदालत की स्थापना को उचित नहीं ठहरा सकती है।
- **समय सीमा:** भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS) के तहत, आपराधिक मुकदमों को आदर्श रूप से दो वर्षों के भीतर पूरा किया जाना चाहिए, जबकि यौन अपराधों के मुकदमों को आदर्श रूप से दो महीने के भीतर समाप्त होना चाहिए; हालाँकि, वादियों को इन समय सीमाओं का कोई वैधानिक अधिकार नहीं है।
- **निपटान लक्ष्य:** केंद्र प्रायोजित योजना के तहत, प्रत्येक FTSC से प्रति तिमाही 41-42 मामलों (सालाना लगभग 165 मामलों) का निपटान करने की अपेक्षा की जाती है।

विरोध प्रदर्शन का अधिकार

संदर्भ

कथित परीक्षा पेपर लीक पर "संसद चलो" विरोध प्रदर्शन ने विरोध प्रदर्शन के संवैधानिक अधिकार और सार्वजनिक सभाओं को विनियमित करने के लिए पुलिस शक्तियों की सीमाओं पर बहस को फिर से शुरू कर दिया है।

विरोध प्रदर्शन के अधिकार के बारे में

- **संवैधानिक आधार:** शांतिपूर्वक और निरायुध (बिना हथियारों के) सम्मेलन का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 19(1)(b) के तहत प्रत्याभूत (guaranteed) है।

- **प्रतिबंध:** यह लोक व्यवस्था, भारत की संप्रभुता और अखंडता, और अन्य संवैधानिक रूप से अनुमेय आधारों के हित में अनुच्छेद 19(3) के तहत युक्तियुक्त निर्बंधनों (reasonable restrictions) के अधीन है।
- **विनियमन:** सार्वजनिक विरोध प्रदर्शनों को लोक व्यवस्था, पुलिसिंग और आपराधिक प्रक्रिया को नियंत्रित करने वाले कानूनों के माध्यम से विनियमित किया जाता है, जिनमें भारतीय न्याय संहिता (BNS) और भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (BNSS) शामिल हैं।
- **विधिविरुद्ध एकत्र होना (Unlawful Assembly):** BNS के तहत, पांच या अधिक व्यक्तियों का एकत्र होना विधिविरुद्ध हो जाता है यदि उनके सामान्य उद्देश्य में आपराधिक बल का उपयोग करना, कानून के निष्पादन का विरोध करना, कोई अपराध करना, या बल या आपराधिक धमकी के माध्यम से किसी व्यक्ति को विवश करना शामिल है।
- **पुलिस की शक्तियां:** BNSS के तहत, एक कार्यपालक मजिस्ट्रेट या एक अधिकृत पुलिस अधिकारी किसी विधिविरुद्ध एकत्र होना, या जिससे सार्वजनिक शांति भंग होने की संभावना हो, को तितर-बितर होने का आदेश दे सकता है; यदि वह इनकार करता है, तो न्यूनतम आवश्यक बल का प्रयोग किया जा सकता है।
- **न्यायिक व्याख्या:**
    - **अनीता ठाकुर बनाम जम्मू-कश्मीर राज्य (2016):** सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों के खिलाफ अत्यधिक पुलिस बल का प्रयोग मौलिक अधिकारों का उल्लंघन करता है।
    - **मजदूर किसान शक्ति संगठन बनाम भारत संघ (2018):** सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि विरोध प्रदर्शन के अधिकार को युक्तियुक्त रूप से विनियमित किया जा सकता है लेकिन इसे समाप्त नहीं किया जा सकता है।
    - **अमित साहनी बनाम पुलिस आयुक्त (2020):** सर्वोच्च न्यायालय ने माना कि विरोध प्रदर्शन के नाम पर सार्वजनिक स्थानों पर अनिश्चित काल तक कब्जा नहीं किया जा सकता है।

एरोसोल(AEROSOLS)

संदर्भ

एक हालिया अध्ययन में पाया गया है कि दक्षिण एशिया धूल-प्रदूषण वाले एयरोसोल से सर्वाधिक जलवायु प्रभावों का सामना करता है।

एरोसोल के बारे में

- **परिभाषा:** वायुमंडल में निलंबित सूक्ष्म ठोस या तरल कण।
- **स्रोत:** प्राकृतिक स्रोतों जैसे रेगिस्तानी धूल, समुद्री फुहार (sea spray), ज्वालामुखी विस्फोट और जंगल की आग, तथा वाहन उत्सर्जन और औद्योगिक प्रदूषण सहित मानवजनित स्रोतों से उत्पन्न होते हैं।
- **जलवायु भूमिका:** सूर्य के प्रकाश को परावर्तित या अवशोषित करके पृथ्वी के विकिरण संतुलन को प्रभावित करते हैं, जिससे तापमान, बादल निर्माण और वर्षा प्रभावित होती है।
- **गुणधर्म:** आमतौर पर इनका आकार कुछ दस नैनोमीटर से लेकर कई दस माइक्रोमीटर तक होता है; हालांकि अक्सर नंगी आंखों से अदृश्य होते हैं।

- **प्रकार:** प्राथमिक एयरोसोल सीधे वायुमंडल में उत्सर्जित होते हैं (जैसे, समुद्री फुहार, खनिज धूल, धुआं, ज्वालामुखी की राख), जबकि द्वितीयक एयरोसोल पूर्ववर्ती गैसों से वायुमंडलीय रासायनिक प्रतिक्रियाओं के माध्यम से बनते हैं (जैसे, सल्फेट एयरोसोल)।

पिक्रोरिज़ा कुरोआ (कुटकी)

संदर्भ

हिमाचल प्रदेश के मंडी जिले में किसानों द्वारा अपनाया गया एक संधारणीय (sustainable) खेती मॉडल पिक्रोरिज़ा कुरोआ (कुटकी) के संरक्षण में मदद कर रहा है।

पिक्रोरिज़ा कुरोआ (कुटकी) के बारे में

- **प्रकृति:** भूमिगत प्रकंदों (rhizomes) वाली एक बारहमासी औषधीय जड़ी-बूटी, जिसे आमतौर पर कुटकी के नाम से जाना जाता है।
- **आवास और वितरण:** अल्पाइन और उप-अल्पाइन हिमालय (2,700-4,500 मीटर) की मूल निवासी।
- **जलवायु आवश्यकताएँ:** छिद्रपूर्ण रेतीली-दोमट मिट्टी वाले नम, उत्तर-पश्चिम मुखी ढलानों पर सबसे अच्छी तरह से बढ़ती है जो प्रकंद के प्रसार में सहायता करती है; लंबे समय तक भारी वर्षा के कारण उच्च मृत्यु दर होती है।
- **औषधीय उपयोग:** ज्वरनाशक (antipyretic), कृमिनाशक (anthelmintic), वातहर (carminative), आमाशय (stomachic), यकृत रक्षक (hepatoprotective), मलेरिया रोधी और रेचक (laxative) के रूप में उपयोग की जाती है; यह भूख बढ़ाने में भी मदद करती है और पारंपरिक रूप से अस्थमा, सर्दी और खांसी के लिए उपयोग की जाती है।
- **संरक्षण की स्थिति:**
    - **IUCN रेड लिस्ट – लुप्तप्राय**
    - **CITES - परिशिष्ट II**

कुशा मिसाइल

संदर्भ

DRDO ने स्वदेशी कुशा मिसाइल का पहला उड़ान-परीक्षण किया।

कुशा मिसाइल के बारे में

- **प्रकृति:** भारतीय उद्योग भागीदारों के सहयोग से DRDO द्वारा स्वदेशी रूप से विकसित एक लंबी दूरी की सतह से हवा में मार करने वाली मिसाइल (LR-SAM) प्रणाली।
- **क्षमता:** लड़ाकू विमानों, मिसाइलों, UAVs और बड़े दुश्मन विमानों सहित उच्च गति, उच्च ऊंचाई वाले हवाई खतरों का पता लगाने, ट्रैक करने और उन्हें रोकने (intercepting) के माध्यम से लंबी दूरी की, हर मौसम में वायु रक्षा प्रदान करती है।

- **प्रणाली के घटक:** लंबी दूरी की वायु रक्षा में आत्मनिर्भरता को सुदृढ़ करने के लिए डिज़ाइन की गई, मिसाइलों, रडार और कमान-एवं-नियंत्रण केंद्रों से युक्त एक एकीकृत स्वदेशी हथियार प्रणाली।

पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (EAS)

संदर्भ

मनीला में 21वें पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (EAS) में, भारत के विदेश मंत्री ने इस बात पर जोर दिया कि वैश्विक समुद्री चैनल सुरक्षित और निर्बाध रहने चाहिए।

पूर्वी एशिया शिखर सम्मेलन (EAS) के बारे में

- **प्रकृति:** राजनीतिक, सुरक्षा और आर्थिक मुद्दों पर रणनीतिक वार्ता के लिए हिंद-प्रशांत (Indo-Pacific) का प्रमुख नेता-नेतृत्व वाला मंच।
- **स्थापना:** 2005 में मलेशिया के कुआलालंपुर में आयोजित पहले शिखर सम्मेलन के साथ शुरू किया गया; भारत इसका एक संस्थापक सदस्य है।
- **सदस्यता:** इसमें 19 सदस्य शामिल हैं— 10 आसियान (ASEAN) सदस्य देश, तिमोर-लेस्ते, और ऑस्ट्रेलिया, चीन, भारत, जापान, न्यूजीलैंड, कोरिया गणराज्य, रूस और संयुक्त राज्य अमेरिका; 2025 में अपने आसियान परिग्रहण (accession) के बाद तिमोर-लेस्ते इसमें शामिल हुआ।

अरुणाचलेश्वर मंदिर

संदर्भ

अरुणाचलेश्वर मंदिर में भक्तों के लिए अनधिकृत प्रवेश की सुविधा हेतु डुप्लीकेट चाबियों का उपयोग करने के आरोप में एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया।

अरुणाचलेश्वर मंदिर के बारे में

- **प्रकृति:** तमिलनाडु के तिरुवन्नामलाई में अरुणाचल पहाड़ी के तल पर स्थित भगवान अरुणाचलेश्वर (शिव) को समर्पित एक हिंदू मंदिर (द्रविड़ शैली की वास्तुकला); इसे अन्नामलैयार मंदिर के रूप में भी जाना जाता है।
- **इतिहास:** भारत के सबसे बड़े और सबसे पुराने मंदिरों में से एक, जिसका उल्लेख प्राचीन शास्त्रों और तमिल शैव साहित्य में मिलता है; वर्तमान संरचना प्रारंभिक चोलों (9वीं शताब्दी ईस्वी) द्वारा बनाई गई थी और बाद के चोलों, होयसलों और विजयनगर नायकों द्वारा इसका विस्तार किया गया था।
- **मंडप:** इसमें विजयनगर काल के दौरान निर्मित प्रसिद्ध हजार-स्तंभों वाले हॉल (Thousand-Pillared Hall) सहित कई हॉल हैं।

मुख्य परीक्षा

दबाव समूह (PRESSURE GROUPS)

संदर्भ

परीक्षाओं में अनियमितताओं को लेकर CJP दबाव समूह के नेतृत्व में चल रहे छात्र विरोध प्रदर्शनों ने सार्वजनिक नीति को आकार देने, सरकारों को जवाबदेह ठहराने और मुद्दे-विशिष्ट मांगों को स्पष्ट करने में दबाव समूहों की बढ़ती भूमिका को उजागर किया है।

समकालीन भारत में मुद्दे-आधारित दबाव समूह विचारधारा-आधारित जन संगठनों का स्थान क्यों ले रहे हैं?

- **आर्थिक विखंडन:** उदारीकरण ने रोजगार को स्थिर कारखाने की नौकरियों से हटाकर अनौपचारिक, अनुबंध और गिग (gig) कार्य में स्थानांतरित कर दिया, जिससे उस साझा वर्ग पहचान का क्षरण हुआ जिसने विचारधारा-आधारित जन संगठनों को बनाए रखा था।
    - उदाहरण के लिए, ओला/उबर (Ola/Uber) ड्राइवरों और स्विगी/ज़ोमैटो (Swiggy/Zomato) डिलीवरी वर्करों ने CITU या INTUC जैसे पारंपरिक औद्योगिक संघों में शामिल होने के बजाय प्लेटफॉर्म-विशिष्ट संघों का गठन किया।
- **शिकायत-आधारित लामबंदी:** जैसे-जैसे सामान्य वैचारिक पहचान कमजोर हुई, लोग एक साझा राजनीतिक विश्वदृष्टिकोण के बजाय एक साझा शिकायत के इर्द-गिर्द अधिकाधिक एकजुट होने लगे।
    - उदाहरण के लिए, नर्मदा बचाओ आंदोलन ने किसानों, आदिवासी समुदायों और पर्यावरण कार्यकर्ताओं को केवल विस्थापन और पुनर्वास के मुद्दे पर एक साथ ला दिया।
- **संस्थागत प्रोत्साहन:** जनहित याचिकाओं (PILs) और अधिकार-आधारित शासन (rights-based governance) ने व्यापक वैचारिक संघर्षों की तुलना में लक्षित कानूनी दावों को अधिक प्रभावी बना दिया, जिससे मुद्दे-विशिष्ट पैरोकारी (advocacy) को प्रोत्साहन मिला। o उदाहरण के लिए, टी.एन. गोदावर्मन मामले ने लंबे जन लामबंदी के बजाय मुकदमेबाजी के माध्यम से भारत के वन शासन को नया आकार दिया।
- **कम लागत वाली डिजिटल लामबंदी:** डिजिटल प्लेटफॉर्म स्थायी कैडर या दीर्घकालिक वैचारिक संगठन के बिना किसी विशिष्ट मुद्दे पर तीव्र, विकेंद्रीकृत लामबंदी को सक्षम करते हैं।
    - उदाहरण के लिए, 'सेव आरे' (Save Aarey) आंदोलन ने किसी पारंपरिक जन संगठन पर निर्भर हुए बिना पेड़ों की कटाई का विरोध करने के लिए सोशल मीडिया के माध्यम से हजारों लोगों को लामबंद किया।
- **चयनात्मक राज्य समायोजन:** सरकारें व्यापक राजनीतिक-आर्थिक व्यवस्था को चुनौती दिए बिना संकीर्ण मांगों को स्वीकार कर सकती हैं, जो वैचारिक टकराव की तुलना में अधिक प्रभावी रणनीति के रूप में मुद्दे-आधारित लामबंदी को सुदृढ़ करता है।
    - उदाहरण के लिए, डोंगरिया कोंध जनजाति और नागरिक समाज समूहों द्वारा निरंतर लामबंदी के कारण ओडिशा सरकार को वेदांता की नियमगिरि खनन परियोजना को रोकना पड़ा, जबकि राज्य की व्यापक खनन नीति अपरिवर्तित रही।

दबाव समूह संसद, न्यायपालिका और मीडिया से परे लोकतांत्रिक जवाबदेही को किस प्रकार नया रूप दे रहे हैं?

- **प्रशासनिक जवाबदेही:** दबाव समूह नीतियां लागू होने से पहले पारदर्शिता, परामर्श और सार्वजनिक औचित्य की मांग करके कार्यपालिका के निर्णय-निर्माण को निरंतर सार्वजनिक जांच के अधीन करते हैं।
    - उदाहरण के लिए, मजदूर किसान शक्ति संगठन (MKSS) ने जन सुनवाई (सार्वजनिक सामाजिक ऑडिट) को संस्थागत रूप दिया, जिससे स्थानीय अधिकारियों को प्रभावित समुदायों के समक्ष व्यय रिकॉर्ड और मजदूरी भुगतान को सार्वजनिक रूप से सत्यापित करने के लिए बाध्य होना पड़ा।
- **साक्ष्य-आधारित नीतिगत जवाबदेही:** स्वतंत्र नागरिक समाज अनुसंधान विश्वसनीय अनुभवजन्य साक्ष्य (empirical evidence) उत्पन्न करता है जो सरकारों को प्रशासनिक दावों के बजाय वास्तविक नीतिगत परिणामों पर प्रतिक्रिया देने के लिए बाध्य करता है।
    - उदाहरण के लिए, प्रथम (Pratham) की शिक्षा की वार्षिक स्थिति रिपोर्ट (ASER) ने बढ़ते स्कूल नामांकन के बावजूद मूलभूत शिक्षा (foundational learning) की कमियों को उजागर किया, जिससे नीतिगत ध्यान नामांकन से हटकर सीखने के परिणामों (learning outcomes) पर केंद्रित हो गया।
- **कॉर्पोरेट बाजार जवाबदेही:** दबाव समूह असुरक्षित व्यावसायिक प्रथाओं को उजागर करके और मजबूत विनियामक मानकों के लिए सार्वजनिक मांग को लामबंद करके निजी बाजार के हितधारकों तक लोकतांत्रिक निगरानी का विस्तार करते हैं।
    - उदाहरण के लिए, सेंटर फॉर साइंस एंड एनवायरनमेंट (CSE) ने प्रमुख शीतल पेय (soft drink) ब्रांडों में कीटनाशक अवशेषों को उजागर किया, जिससे मजबूत विनियामक जांच और उच्च खाद्य सुरक्षा मानकों की शुरुआत हुई।
- **एल्गोरिदमिक और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर जवाबदेही:** प्रौद्योगिकी पैरोकार समूह (Technology advocacy groups) परिचालन पारदर्शिता, डेटा संरक्षण और प्रौद्योगिकी-संचालित बहिष्करण के खिलाफ सुरक्षा उपायों में सुधार के लिए डिजिटल शासन प्रणालियों की जांच करते हैं।
    - उदाहरण के लिए, इंटरनेट फ्रीडम फ़ाउंडेशन (IFF) ने कल्याणकारी वितरण में बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण विफलताओं का दस्तावेजीकरण किया, जिससे सरकारों को डिजिटल कल्याण प्रणालियों में ऑफ़लाइन शिकायत निवारण और फ़ॉलबैक तंत्र (fallback mechanisms) को मजबूत करने के लिए प्रेरित किया गया।
- **सहभागी पर्यावरणीय जवाबदेही:** जमीनी स्तर के आंदोलन (Grassroots movements) पर्यावरणीय मंजूरियों को पारिस्थितिक सुरक्षा उपायों और प्रभावित समुदायों की सूचित सहमति (informed consent) पर निर्भर बनाकर सरकारों और परियोजना अधिकारियों को जवाबदेह ठहराते हैं।
    - उदाहरण के लिए, सर्वाइवल इंटरनेशनल (Survival International) द्वारा समर्थित डोंगरिया कोंध जनजाति ने बॉक्साइट खनन को रोकने के लिए नियमगिरि पहाड़ियों में ग्राम सभा की सहमति का उपयोग किया, जिससे पर्यावरणीय निर्णय-निर्माण में सामुदायिक भागीदारी सुदृढ़ हुई।

डिजिटल प्रौद्योगिकी ने दबाव-समूह की राजनीति की प्रकृति को कैसे फिर से परिभाषित किया है?

- **विकेंद्रीकृत संगठन:** डिजिटल प्लेटफॉर्म कम-नेतृत्व (leader-light) वाले, नेटवर्क-आधारित ढांचों को सक्षम करते हैं जहां बिखरे हुए नागरिक स्थायी पदानुक्रम (hierarchies) या औपचारिक संगठनात्मक बुनियादी ढांचे के बिना सामूहिक कार्रवाई का समन्वय कर सकते हैं।
    - उदाहरण के लिए, 'सेव आरे' आंदोलन ने केंद्रीकृत नेतृत्व या पारंपरिक जन संगठन पर निर्भर हुए बिना तत्काल सोशल मीडिया समन्वय के माध्यम से हजारों लोगों को लामबंद किया।
- **क्राउडफंडेड पैरोकारी:** ऑनलाइन धन उगाही सूक्ष्म-दान (micro-donations) को सक्षम करके बड़े संस्थागत दाताओं पर निर्भरता को कम करती है, जिससे पैरोकारी समूहों को अधिक वित्तीय स्वायत्तता मिलती है।
    - उदाहरण के लिए, इंटरनेट फ्रीडम फ़ाउंडेशन (IFF) कॉर्पोरेट फंडिंग के बजाय सार्वजनिक चंदे (public subscriptions) के माध्यम से अपनी कानूनी पैरोकारी का वित्तपोषण करता है।
- **प्रत्यक्ष विमर्श निर्माण:** सोशल मीडिया दबाव समूहों को पारंपरिक मीडिया गेटकीपरों (gatekeepers) को दरकिनार करते हुए नागरिकों के साथ सीधे संवाद करने और वास्तविक समय में सार्वजनिक विमर्श को आकार देने की अनुमति देता है।
    - उदाहरण के लिए, 2020-21 के किसान विरोध प्रदर्शनों के दौरान, ट्रैक्टर2ट्विटर (Tractor2Twitter) अभियान ने किसान संघों को प्रतिकूल टेलीविजन कवरेज के बावजूद अपनी मांगों को सीधे संवाद करने में सक्षम बनाया।
- **व्यापक (स्केलेबल) नीतिगत भागीदारी:** डिजिटल उपकरण सार्वजनिक परामर्श और विनियामक प्रक्रियाओं में जन भागीदारी को सक्षम करके व्यक्तिगत शिकायतों को बड़े पैमाने पर नीतिगत फीडबैक में बदल देते हैं।
    - उदाहरण के लिए, पर्यावरण प्रभाव आकलन (EIA) 2020 अधिसूचना के मसौदे पर परामर्श के दौरान, पर्यावरण समूहों ने डिजिटल अभियानों के माध्यम से 17 लाख से अधिक सार्वजनिक आपत्तियों का समन्वय किया।
- **सतत नागरिक जुड़ाव:** डिजिटल प्लेटफॉर्म दबाव समूहों को जन जागरूकता बनाए रखने, अनुवर्ती कार्रवाइयों का समन्वय करने और अभियानों को तेजी से अनुकूलित करने में सक्षम बनाते हैं, जिससे नागरिक जुड़ाव प्रासंगिक (episodic) होने के बजाय निरंतर बना रहता है।
    - उदाहरण के लिए, #SaveTheInternet अभियान ने ऑनलाइन याचिकाओं, व्याख्याओं (explainers) और समन्वित आउटरीच के माध्यम से नागरिकों को तब तक लगातार लामबंद किया जब तक कि ट्राई (TRAI) ने भेदभावपूर्ण डेटा मूल्य निर्धारण पर प्रतिबंध नहीं लगा दिया।